उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें तथा शैक्षिक उपलब्धि में सह संबंध का अध्ययन

Dr. Balidan Jain
Asst. Prof. (Education)
EDUCATION DEPARTMENT
JRN RAJASTHANVIDYAPEETH
(DEEMED TO BE UNIVERSITY)
UDAIPUR

ITS TIMES TO THINK THAT WHERE WE HAVE TO LEAD OUR NEW GENERATION .ACCORDING TO PROF GOODS "SOCIO ECONOMIC STATUS IS DETERMINED BY SUCH INDICES AS TYPES OF OCCUPATIONS AND THE PRESTIGE ASSOCIATED WITH THEM, YEAR OF EDUCATION, SIZE OF INCOME, QUALITY OF HOUSING AND DESIRABILITY OF NEIGHBORHOOD." THIS IS THE ERA OF WEB BASED ELECTRONIC INFORMATION ENABLED SOCIAL MEDIA SURROUNDED SOCIETY , WHERE TEACHER FACES MANY CHALLENGES REGARDING SCHOOL ENVIRONMENT AND LEARNING PROCESS OF LEARNER SIMULTANEOUSLY , LEARNER ALSO FACE SUCH CHALLENGES ABOUT HOW TO STUDY IN PROPER MANNER . DOES ANY SUCH KIND OF FACT EXIST THAT LEARNING HABITS BASED ON GENETICS? IN THIS PAPER RESEARCHER WANT TO KNOW ABOUT COMPRESSION AND CORRELATION BETWEEN ACADEMIC ACHIEVEMENT AND STUDY HABITS OF HIGH AND LOW SOCIO-ECONOMIC STATUS HOLDING STUDENTS.

प्रस्तावना :–

शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को सुनागरिक बनाने के साथ–साथ समान रूप से जीवन के लिए तैयार करना भी है। इस दृष्टि से ज्ञान एवं अवबोध के साथ–साथ कौशल युक्त किया सम्पादन भी शिक्षा का अविभाज्य अंग है वस्तुतः अर्जित ज्ञान का निजी जीवन में उपयोग ही वास्तविक ज्ञान है। अध्ययन आदतें व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रमुख घटक है। अध्ययन आदतों का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अत्यन्त महत्व है वह क्षेत्र चाहे नियमितता, वैज्ञानिक चिन्तन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण , दृष्टिकोण जिज्ञासा, आत्मविश्वास किसी का भी हो।

आज का युग वैज्ञानिक युग है प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण , चिन्तन, जिज्ञासा दूसरे व्यक्ति से भिन्न होती है। प्रत्येक व्यक्ति की अध्ययन आदतें भी भिन्न–भिन्न होती है। यह भिन्नता व्यक्ति के व्यवहारों से परिलक्षित होती है। लेकिन वर्तमान समय में व्यक्ति को अपने विषय विशेष में अध्ययन आदतों का ज्ञान ही नहीं होता हे।

जिससे वह उचित व्यवस्था का चयन नहीं कर पाता है। अरूचिकर व्यवस्था में लगा व्यक्ति जीवनभर कार्य सम्पादन के प्रति उदासीन बना रहता है, एवं उसके दूरगामी परिणाम स्वरूप उसके व्यक्तित्व में चिड़चिड़ापन, खीझ, घृणा छाई रहती है।

आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अध्ययन अनिवार्य है तो शैक्षिक क्षेत्र किस प्रकार से वांछित रह सकता है उत्तम शैक्षिक उपलब्धि के लिये विद्यार्थियों को अपने ज्ञान को निरन्तर बढ़ाने के लिये सतत् अध्ययन आवश्यक है साथ ही साथ अध्यापकों की अध्ययन आदतें उचित हो, वे पढने के शौकिन हो और वे विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी आदतें विकसित करने की प्रेरणा देता रहे और भविश्य की तैयारी के लिये उपयुक्त आधार प्रदान करें, अतिआवश्यक है।।

आज हम स्वतंत्र है स्वतंत्रता से पूर्व देश में विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व प्रदान करने के लिये छात्र तैयार करने की कल्पना भी उस समय कुछ चिन्तकों ने की थी।

केवल नेतृत्व ही नहीं अपितु योग्य एवं साहसी छात्र तैयार हो, उनमें प्रगतिशील चेतना उत्पन्न हो, जो देश का नाम ऊँचा कर सकें तथा उनमें न्याय स्वतंत्रता, समानता और प्रजातन्त्रात्मक भावनाओं का विकास हो सकें, उनमें अनुशासन की भावना उत्पन्न हो तथा वे अपने व्यक्तित्व का विकास करते हुए समाज में साम्राज्य स्थापित कर सकें।

ब्रिटिश काल में जो शिक्षा प्रदान की जाती थी वह शिक्षा बालकों के जीवन से संबंधित नहीं थी, तथा संकीर्णता के कारण बालकों में व्यक्तित्व का विकास का अभाव था, उस समय शिक्षण पद्धतियाँ ऐसी थी जिनमें बालकों को स्वतन्त्र पूर्वक विचार करने का अवसर प्रदान नहीं किया जाता था। शिक्षक व छात्रों में निकट संबंध का अभाव होने से चरित्र निर्माण व अनुशासन की भी समस्या थी, ऐसे समय में कुछ चिन्तकों तथा शिक्षाविदों ने प्रगतिशील विद्यालयों की स्थापना पर विचार किया, उनमें प्रजातन्त्रात्मक भावनाओं का विकास हो तथा वे समाज में नेतृत्व प्रदान कर सकें, शिक्षा के क्षेत्र में नये प्रयोग हो सकें, शिक्षा स्तर ऊँचा उठ सकें।

शोध के उद्देश्य :–

समस्या के अध्ययन का औचित्य ही समस्या की उपादेयता को सिद्ध करता है। अनुसंधान के परिणाम शिक्षा सिद्धान्तों को प्रभावित करते है अतः इस अध्ययन का औचित्य निम्न दृश्टि से महत्वपूर्ण है:–

(1) **अध्ययन आदतों के संदर्भ में** – विद्यार्थियों को वैसे तो शिक्षा देने का कार्य जीवन में कई लोगों द्वारा किया जाता है लेकिन सर्वाधिक समय विविध प्रकार के ज्ञान को देने का कार्य विद्यालय के शिक्षक ही करते है। अध्यापक विद्यार्थियों की रूचि जानकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ा ही सकता है। विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें चारों ओर के वातावरण से प्रभावित होती है इसिलिए उनकी अध्ययन आदतें शीघ्र मोड ले लेती है लेकिन विद्यार्थियों को अपनी अध्ययन आदतों का सही ज्ञान न होने के कारण इन्हें सही रूप में विकसित नहीं कर पाते है।

(2) **सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में** – कोई भी ऐसी संस्था जिस पर कोई दबाव या अंकुश नही होता अर्थात् स्वतन्त्र होती है, किसी बड़े पेड के समान शीघ्रता से बढ़ती जाती है।

जब से भारत में पब्लिक स्कूलों की स्थापना की गयी तभी से लोगों को यह कहते सुना गया कि पब्लिक स्कूल जनता को दो भागों में विभाजित करते है, ये दो श्रेणी के है अमीर गरीब की, क्योंकि इनमें सिर्फ अमीरों के बच्चे ही पढ़ सके, इसलिये ये बिल्कुल अलग श्रेणी बनाते है। तथा इस प्रकार के स्कूल अमीरों एवं गरीबों के मध्य की खाई को पाटने की बजाय ओर अधिक चौड़ी करता है इस समस्या को चुनने का कारण यह था की अपने अनुसंधान द्वारा जनता की इस भ्रामक धारणा को दूर करने के लिये तथा स्वंय सत्यता का पता लगाने के लिये इस समस्या का चुनाव कियझं

(3) **शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में** – ऐसा विश्वास है कि अध्ययन आदतें शैक्षिक निष्पति में महान् योगदान देती है, क्योंकि जब पढ़ने में आदतें उचित नहीं होती है तो चाहा गया शैक्षिक विकास सम्भव नहीं हो पायेगा। कई बार ऐसा भी होता है कि उचित अध्ययन आदतों एवं अध्ययन की कमी के कारण अधिक समय व्यर्थ ही चला जाता है। अतः उचित अध्ययन के लिये अध्ययन आदतों का सहारा लेना ही अनिवार्य होगा जिससे शैक्षिक निष्पति में सुधार हो सकें। अतः स्पष्ट है कि अध्ययन आदतें शिक्षार्थी की शैक्षिक उपलब्धि में सहायक है।

शोध परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध की निम्न परिकल्पनाएँ निधारित की जाएगी जो कि निम्न प्रकार से है :–

(1) उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सह संबंध नहीं है।

शोध के उद्देश्य :–

(1) उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वालें विद्यार्थियों का पता लगाना।

(2) उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वालें विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाना।

(3) उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वालें विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(4)उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि में सह संबंध ज्ञात करना।

1.4 शोध परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध की निम्न परिकल्पनाएँ निधारित की जाएगी जो कि निम्न प्रकार से है :–

(1) उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वालें विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है सर्वेक्षण विधि वर्तमान की प्रतिनिधि, स्थिति, व्यवहार तथा शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु प्रस्तुत की जाने वाली विधि है।

शोधकार्य में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, अध्ययन आदतों का अध्ययन किया जा रहा है इसमें किसी मूलभूत सिद्धान्त का प्रतिवेदन नहीं करना है वरन् वर्तमान तथ्यों को एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण विधि से अध्ययन किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे प्राप्त आंकडों का दत्त विश्लेषण करने के लिये निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया :–

(1) मध्यमान

(2) मानक विचलन

(3) टी–परीक्षण

(4) प्रतिशत

न्यादर्श :—माध्यमिक स्तर के कुल 500 विद्यार्थियों को प्रस्तुत शोध हेतु लिया गया। समग्र न्यादर्श विद्यार्थियों पर सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि प्रमापनी प्र**शा**सित की गई। मेन्यूअल में दी गई श्रेणियों के आधार पर उच्च तथा निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियो के 2 समूह बनाने के लिए शोधार्थी ने जिन विद्यार्थियों के दत्तों का मान उच्च व निम्न श्रेणी में आया उनका चयन किया गया इस तरह कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया जिसमें 150 विद्यार्थी उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि था को ही आगे शोध हेतु लिया गया

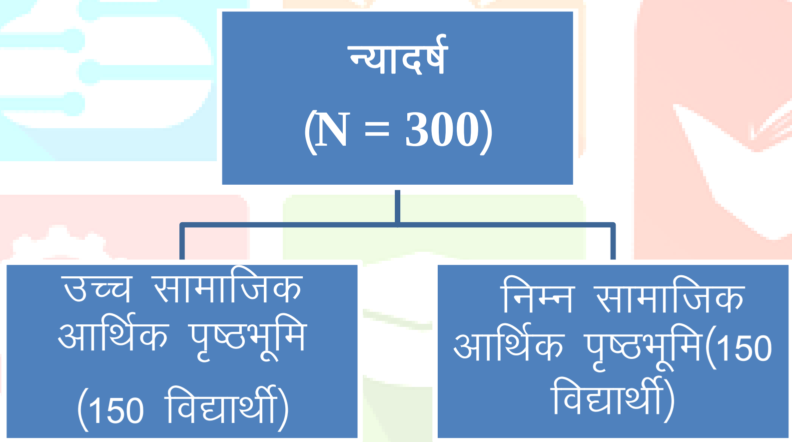

5.11 शोध उपकरण :—

शोध उपकरणों के माध्यम से विश्वसनियता एवं वैधता निर्भर करती है उससे प्राप्त निष्कर्षो की क्षमता और व्यवहारिकता एवं उपयोगिता निर्धारित होती है अतः प्रत्येक कार्य में उपयुक्त उपकरणों का चयन एवं विकास आवश्यक है।

उपकरण दो प्रकार के है—

(1) स्वनिर्मित उपकरण।

(2) मानकीकृत उपकरण।

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा अध्ययन आदतों के लिए (SHI) – (M.Mukhopedhyaya, D.N. Sansanwal) व सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के लिए (B. Kuppuswamy) द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया।

4.3 विश्लेषण . व्याख्या एवंशोध निष्कर्ष :–

उद्देश्यः– उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वालें विद्यार्थियों का पता लगाना।

माध्यमिक स्तर के कुल 500 विद्यार्थियों को प्रस्तुत 'ोध हेतु लिया गया। समग्र न्यादर्श विद्यार्थियों पर सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि प्रमापनी प्रशासित की गई। मेन्यूअल में दी गई श्रेणियों के आधार पर उच्च तथा निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियो के 2 समूह बनाने के लिए 'ोधार्थी ने जिन विद्यार्थियों के दत्तों का मान उच्च व निम्न श्रेणी में आया उनका चयन किया गया इस तरह कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया जिसमें 150 विद्यार्थी उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि तथा 150 विद्यार्थी निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि को ही आगे शोध हेतु लिया गया जिन्हें सारणी में निम्नानुसार दर्शाया गया है :–

सारणी संख्या 1

उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वालें विद्यार्थियों का पता लगाना

S.No.	Category	No. of Student
1.	उच्चतम	040
2	उच्च	150
3	औसत	100
4.	निम्न	150
5	निम्न से नीचे	060
		500

व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी संख्या 1 के प्राप्त आँकड़ो का विश्लेषण करने से यह पाया गया कि समग्र विद्याथियों में से 040 विद्यार्थी उच्चतम सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, 150 विद्यार्थी उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, 100 विद्यार्थी औसत सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, 150 विद्यार्थी निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि एवं 060 विद्यार्थी निम्न से नीचे पाये गये है।

सारणी संख्या 2

उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वालें विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमानवार विश्लेषण

क्र.सं.	क्षेत्र का नाम	कथन संख्या	कटपॉइन्ट	मध्यमान
1.	समझने की योग्यता	12	$12 \times 2 = 24$	49.11
2.	एकाग्रता	10	$10 \times 2 = 20$	24.21
3.	कार्य अभिविन्यास	9	$9 \times 2 = 18$	22.32
4.	अध्ययन सैट्स	7	$7 \times 2 = 14$	19.43
5.	अन्तर्क्रिया	3	$3 \times 2 = 6$	8.55
6.	अभ्यास	4	$4 \times 2 = 8$	10.66
7.	सहारा देना	4	$4 \times 2 = 8$	10.77
8.	अभिलेखन करना	2	$2 \times 2 = 4$	5.88
9.	भाषा	1	$1 \times 2 = 2$	2.99

सारणी संख्या 3

निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि केविद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमानवार विश्लेषण

क्र.सं.	क्षेत्र का नाम	कथन संख्या	कटपॉइन्ट	मध्यमान
1.	समझने की योग्यता	12	12 × 2 = 24	41.12
2.	एकाग्रता	10	10 × 2 = 20	20.21
3.	कार्य अभिविन्यास	9	9 × 2 = 18	19.00
4.	अध्ययन सैट्स	7	7 × 2 = 14	20.55
5.	अन्तर्क्रिया	3	3 × 2 = 6	10.00
6.	अभ्यास	4	4 × 2 = 8	9.13
7.	सहारा देना	4	4 × 2 = 8	12.88
8.	अभिलेखन करना	2	2 × 2 = 4	5.88
9.	भाषा	1	1 × 2 = 2	4.00

सारणी संख्या 4

उच्च व निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमानवार तुलनात्मक विश्लेषण

क्र.सं.	क्षेत्र	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	0.05 / 0.01 पर सार्थकता
1.	समझने की योग्यता	उच्च	49.11	2.52	3.77	0.05 स्तर पर सार्थक है।
		निम्न	41.12	2.79		
2.	एकाग्रता	उच्च	24.21	2.74	1.68	0.05 स्तर पर असार्थक है।
		निम्न	20.21	5.27		
3.	कार्य अभिविन्यास	उच्च	21.28	3.61	1.74	0.05 स्तर पर असार्थक है।
		निम्न	19.00	3.22		
4.	अध्ययन सैट्स	उच्च	19.43	1.81	2.67	.05 स्तर पर सार्थक है।
		निम्न	20.55	1.61		
5.	अन्तक्रिया	उच्च	8.55	1.13	1.88	.05 स्तर पर असार्थक है।
		निम्न	10.00	1.25		
6.	अभ्यास	उच्च	10.66	1.50	4.86	.05 स्तर पर सार्थक है।
		निम्न	9.13	1.72		
7.	सहारा देना	उच्च	10.77	1.61	1.48	.05 स्तर पर असार्थक ळें
		निम्न	12.88	1.20		
8.	अभिलेखन करना	उच्च	7.18	1.10	1.13	.05 स्तर पर असार्थक है।
		निम्न	5.88	1.41		
9.	भाषा	उच्च	2.99	0.73	2.66	0.05 पर असार्थक है।
		निम्न	4.00	0.08		

df = 299के सारणीमान

0.05 स्तर पर सारणीमान – 1.97

0.01 स्तर पर सारणीमान –2.59

सारणी संख्या 5

उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का प्रतिशतवार विश्लेषण

क्र.सं.	श्रेणी	उच्च वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1.	प्रथम	60	40
2.	द्वितीय	54	36
3.	तृतीय	36	24

सारणी संख्या 6

निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का प्रतिशतवार विश्लेषण

क्र.सं.	श्रेणी	निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1.	प्रथम	30	20
2.	द्वितीय	66	44
3.	तृतीय	54	36

सारणी संख्या 7

उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध विश्लेषण

समूह	च्र	सह संबंध गुणांक का मान	.01 / .05 पर सार्थकता
उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि विद्यार्थी	अध्ययन आदतें (Xचर)	0.990	0.01 सार्थक सहसंबंधं पाया गया।
	शैक्षिक उपलब्धि (Yचर)		

स्वतन्त्रता के अंश (df=148) पर

0.05 स्तर पर मान – 0.760

0.01 स्तर पर मान – 0.973

उपरोक्त सारणी से निम्न परिणाम परिलक्षित होते हैः–

अध्ययन आदतें तथा शैक्षिक उपलब्धि दोनो चरो पर न्यादर्श विद्यार्थियों (N=150) के प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक मान r = 0.990 प्राप्त हुआ। जो कि उच्च धनात्मक सहसंबंध गुणांक है।

यह मान 0.01 स्तर के सारणीमान 0.973 से अधिक पाया गया है। इससे यह कहा जा सकता है जब एक चर के मान में वृद्धि होती है तो दूसरा चर उसी दिशा में बढता

है। अतः उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदते अच्छी से उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी रहेगी।

सारणी संख्या 8

निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें तथा शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध विश्लेषण

समूह	चर	सह संबंध गुणांक का मान	.01 / .05 पर सार्थकता
निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि विद्यार्थी	अध्ययन आदतें (X चर)	0.770	0.01 सार्थक सहसंबंधं पाया गया।
	शैक्षिक उपलब्धि (Y चर)		

स्वतन्त्रता के अंश (df=148) पर

0.05 स्तर पर मान – 0.760

0.01 स्तर पर मान – 0.973

उपरोक्त सारणी से निम्न परिणाम परिलक्षित होते हैः–

अध्ययन आदतें तथा शैक्षिक उपलब्धि दोनो चरो पर न्यादर्श विद्यार्थियों (N=150) के प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक मान $r = 0.770$ प्राप्त हुआ। जो कि धनात्मक सहसंबंध गुणांक है।

यह मान 0.01 स्तर के सारणीमान 0.973 से अधिक पाया गया है। इससे यह कहा जा सकता है जब एक चर के मान में वृद्धि होती है तो दूसरा चर उसी दिशा में बढता

है। अतः निम्न सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदते कम अच्छी होने से उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी कम रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Research Survey

1. Buch, M.B. (1972-78) : "A survey of research in education", M.S.University, baoda.
2. Buch. M.B. (1983-88) : "Fourth survey of research in education", Vol. II
3. Buch. M.B. (1978-83) : "Third survey of research in education", National council of educational research and training.

Books

1. बेस्ट जॉन डब्ल्यू (1995) ''शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. भटनागर, सुरेश (1997) ''आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ'' लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. ढोढियाल, एस.एन. एवं फाटक, ए.बी. (1982) ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

4. नागर, कैलाशनाथ (1983) ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज मेरठ।

5. ओड, प्रो. एल.के. (1991) ''शैक्षिक प्रशासन'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

6. पाठक पी.डी. : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

7. पचौरी, डॉ. गिरीश (2002) ''शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान'', इन्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस, मेरठ।

8. शर्मा, आर.ए. (2004) ''शिक्षा अनुसंधान'', लाल बुक डिपो, मेरठ।

9. सुखिया एस.पी. मेहरोत्रा, पी.बी. मेहरोत्रा (1984) ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

10. श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. (2007) ''मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

11. सरीन एवं सरीन (2008) ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

12. त्रिपाठी, डॉ. शालिग्राम (2006) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', कनिश्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली–1100 002।

13. वर्मा, डॉ. रामपाल सिंह ''अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

Surveys &Journals :

1. Best J.W. (1963) "Research in Education", New York : Prentice Hall of India(P) Ltd.

2. Borg. W.R. (1963)."Educational Research an Introduction" Longmans Green and Co. New York.

3. C.V., Bar, A.S. Scates, D.E. (1973) : Methodology of Educational Research" New York, P. 152

4. Carter V. Good "Dictionary of Education", New York, M.C. Gray Hills Book, Cas Inc.

5. Fox D.T. (1969) "The Research process in Education", New York, P. 113

6. Good C.V. (1959) : Introduction to Educational Research New York.

पत्र–पत्रिकाएँ

1. Jersild, A.T. Etal : "A Comparative study of the worries of children in two school situations." Journal of Experiments in Education. No. – 9 – 1941 PP 23 – 26.

2. Journal of Value Education (2004) "राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण पत्रिका।

3. नई शिक्षा (2005) राजस्थान प्रकाश 28–29 त्रिपोलिया बाजार, जयपुर।

4. शिविरा पत्रिका (2006) : निर्देशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. शिविरा पत्रिका (2007) : निर्देशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

6. Vora, T.A. : A study of Effects of Anxiety & Attitude of reading Achievement. Journal of Education & Psychology. Vol. 38 No. 1 April, 1980, P.P. 36.